अध्याय 10

IEAX93

ikrh; jkT;k dk ;x

(500 ई. से 700 ई. तक)

चित्र–10.1

गुप्तवंश के समाप्त होने के बाद उत्तर भारत में कई छोटे–छोटे राज्य हुए। एक तरफ कुछ नए छोटे राज्य उभरे तो दूसरी तरफ कुछ पुराने राज्यों ने, जो गुप्त राजाओं के अधीन थे, अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर लिया। ये राज्य अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए एक–दूसरे से लड़ते रहते थे। इस काल के राज्यों में उत्तर भारत का वर्धन और दक्षिण भारत के चालुक्य एवं पल्लव वंश प्रमुख हैं। इस पाठ में हम इन्हीं राज्यों के बारे में पढ़ेंगे।

हर्षवर्धन (606 ई. से 647 ई. तक)

गुप्त वंश के पतन के लगभग 100 साल बाद एक नए राज्य का उदय हुआ। दिल्ली के पास थानेश्वर नामक जगह पर इस राज्य की राजधानी थी। इसी राज्य में हर्षवर्धन नाम का एक प्रसिद्ध राजा हुआ, जिसे हर्ष के नाम से भी जाना जाता है। वह 606 ई. के आसपास थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। वह एक शक्तिशाली शासक था और उसने गुप्त वंश की तरह उत्तर भारत में एक बड़ा साम्राज्य बनाने का प्रयास किया। उसने उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों को जीत लिया। लेकिन जब उसने दक्षिण के राज्यों पर चढ़ाई करनी चाही तो चालुक्य वंश का राजा पुलकेशिन द्वितीय उसे रोकने में सफल हुआ।

हर्ष का साम्राज्य पंजाब से उड़ीसा तक फैला था। उसने आगे चलकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई क्योंकि कन्नौज उसके राज्य के बीच में पड़ता था। 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हर्ष की मृत्यु हो गई।

हर्ष ने जिन राज्यों को जीता वे उसे कर देते थे और जब वह युद्ध करता तो उसकी सहायता के लिए अपने सैनिक भेजते थे। वे हर्ष के अधीन तो थे लेकिन अपने राज्य पर स्वयं शासन करते थे। अपने मामलों में निर्णय भी स्वयं लेते थे। संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान बाणभट्ट हर्ष का दरबारी कवि था। उसके द्वारा रचित ''हर्षचरित'' में हर्ष की जीवनी के साथ उस समय के शहर, गाँव, जंगल आदि का वर्णन मिलता है। हर्ष के समय में चीन से ह्वेनसांग नामक बौद्ध भिक्षु भारत आया था। उसने भारत के विभिन्न बौद्ध तीर्थों व विहारों की यात्रा की और वहाँ रहकर बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया था। उसने भारत में अपने अनुभवों का विस्तृत संस्मरण लिखा है। इससे हमें उन दिनों के बारे में काफी जानकारी मिलती है।

चित्र–10.2 सम्राट हर्षवर्धन

हर्ष विद्वान तथा विद्या का संरक्षक था। उसने संस्कृत में रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका नामक नाटक लिखे।

हर्ष शिव का उपासक था। उसने अपने शासन काल में कन्नौज में बौद्ध सभा का आयोजन किया था। वह प्रत्येक चौथे वर्ष प्रयाग में धर्म सम्मेलन आयोजित करता था। इस सम्मेलन में वह अपना सब कुछ अनाथों, गरीबों और भिक्षुओं को दान कर देता था।

ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध यात्री था। वह 630 ई. में भारत यात्रा पर आया था। शिक्षा के प्रति उसका लगाव इतना था, कि बहुत मुसीबतों को झेलते हुए, मरुस्थलों एवं पहाड़ों को पार करते हुए भारत आया और नालंदा विहार में बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया। हर्ष के काल में नालंदा बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। हर्ष ने 100 गांव नालंदा के विहार को दान में दिए थे जिसकी आय से इसका खर्च चलता था।

चित्र–10.3 चीनी बौद्ध यात्री

ह्वेनसांग भारत में 5 वर्षों तक रहा और वापस अपने देश जाकर उसने अपनी यात्रा का विवरण लिखा। वह कहता है कि भारत में उस वक्त बौद्ध धर्म उतना लोकप्रिय नहीं था जितना कि वह समझता था। ह्वेनसांग ने छत्तीसगढ़ की भी यात्रा की थी। उसने दक्षिण कोसल के मुख्य शहर सिरपुर (श्रीपुर) को उस समय के बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बताया है।

दक्षिण भारत के राज्य

चालुक्य

इस समय भारत के दक्षिणी भाग अर्थात महाराष्ट्र और कर्नाटक में चालुक्यों का शासन था। उनकी राजधानी वातापी थी। चालुक्य वंश का पुलकेशिन द्वितीय एक शक्तिशाली शासक था। उसने हर्षवर्धन को पराजित किया और दक्कन (दक्षिण) पर लंबे समय तक शासन किया। उसने पल्लव वंश के राजा महेन्द्रवर्मन को भी पराजित किया। लेकिन कुछ समय बाद नृसिंहवर्मन से पराजित हो गया।

चालुक्यों की राजधानी वातापी काफी समृद्ध नगर था। पश्चिम में ईरान, अरब तथा लाल सागर के बंदरगाहों से तथा दक्षिण पूर्व एशिया के राज्यों से यहाँ के व्यापारियों के व्यापारिक संबंध थे।

चालुक्य राजा कला के प्रेमी व संरक्षक थे। उन्होंने दक्कन की पहाड़ियों में गुफा मंदिर तथा अन्य मंदिरों के निर्माण के लिए काफी धन दिया था। विश्वप्रसिद्ध अजंता एलोरा की गुफाओं के निर्माण में भी चालुक्यों ने बहुत धन दिए थे। अजंता की गुफा के एक चित्र में पुलकेशिन द्वितीय को ईरान के राजदूतों का स्वागत करते हुए दिखाया गया है। चालुक्यों के काल में ऐहोल, बादामी और पटट्दकल नगर कला के प्रमुख केन्द्र थे।

चालुक्य राजा जैन धर्म को मानते थे लेकिन कुछ भौव व वैष्णव धर्म को भी मानते थे।

पल्लव वंश

पल्लवों ने सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु में अपना राज्य स्थापित किया था। पल्लव राजाओं की राजधानी कांचीपुरम् (कांची) थी। इस वंश का प्रमुख भाासक महेन्द्रवर्मन था। वह हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय का समकालीन था। उसने चट्टान खोदकर मंदिर बनाने की प्रथा भाुरू की थी। वह एक प्रसिद्ध लेखक व नाटककार भी था। लेकिन वह पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध में हार गया। उसका बेटा नृसिंहवर्मन भी एक प्रसिद्ध शासक था। उसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय को हराकर अपने पिता की हार का बदला लिया था।

पल्लव राजा शुरू में जैन धर्म को मानते थे, मगर बाद में शिव व विष्णु के उपासक बन गए। उन्होंने अनेक मंदिर बनवाए। कुछ मंदिर पत्थर की विशाल शिलाओं को काट कर बनाए गए थे। महाबलिपुरम का रथ मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है। कुछ मंदिर पत्थरों की शिलाओं को जोड़कर बनाए जाते थे जैसे, कांची का कैलाश मंदिर। ये मंदिर केवल पूजा करने के स्थान ही नहीं थे बल्कि ये आसपास के लोगों के इकट्ठा होकर विचार–विमर्श करने, बच्चों को शिक्षा देने तथा उत्सव आदि मनाने के स्थान भी थे।

चित्र–10.4 कांची का कैलाश मंदिर

इस काल में दक्षिण भारत में एक ऐसा समुदाय उभरा जिनका विश्वास था कि धर्म ईश्वर, शिव या विष्णु की व्यक्तिगत उपासना है। यही विचारधारा आगे चलकर 'भक्ति' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसमें मुख्य रुप से समाज के सामान्य वर्ग के लोग शामिल थे। ये लोग जगह–जगह शिव या विष्णु के भजन गाते हुए घूमते थे। इनके भजन जनसाधारण की भाषा तमिल में लिखे होते थे। इनमें विष्णु के उपासक आल्वार के नाम से जाने जाते थे तथा शिव के उपासक नायनार के नाम से जाने जाते थे। दक्षिण भारत के समाज में इनका बहुत प्रभाव था।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) [kkyh LFkku dh iwfrZ dhft,&

1. ठोस चट्टानों को काटकर मंदिर बनवाने की कला की शुरूआत ––––– ने की थी।
2. पल्लवों के काल में ––––– शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।
3. पल्लव राजा ––––– लेखक और नाटककार भी था।
4. पुलकेशिन द्वितीय ने ––––– को युद्ध में पराजित किया था।
5. चालुक्य नरेश नृसिंहवर्मन ने ––––– को युद्ध में पराजित किया था।

IEJTAQ

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हर्षवर्धन का राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला था ?
2. हवेनसांग ने भारतीय समाज के बारे में क्या कहा है ?
3. हर्ष के धार्मिक कार्यो का वर्णन कीजिए ?
4. चालुक्यों का व्यापार किन–किन क्षेत्रों से होता था ?

(स) laf{kIr fVIi.kh fyf[k,&

1 आल्वार एवं नायनार
2 हवेनसांग